Baba’s Praise

6/9/2015

- बागवान भी बैठा है, माली भी है, फूल भी हैं। यह नई बात है ना।
- तुम बच्चे जानते हो, याद भी करते हैं बागवान-खिवैया को। अब यहाँ आये हैं, यहाँ से पार ले जाने।
- बागवान आया है। माली भी है। माली नम्बरवार होते हैं। बच्चे भी समझते हैं यह बगीचा है, इसमें कांटे नहीं, कांटे दु:ख देते हैं। बाप तो किसको दु:ख नहीं देते। वह है ही दु:ख हर्ता, सुख कर्ता। कितना मीठा बाबा है।
- ज्ञान का सागर है परमपिता परमात्मा, वह अथॉरिटी है ना। ज्ञान का सागर एक बाप है इसलिए गाया जाता है सारा समुद्र स्याही बनाओ तो भी खुटने वाला नहीं है। और फिर एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति का भी गायन है।

- बाप सुख देने में शक्तिमान है इसलिए उनका गायन है। यह भी ड्रामा बना हुआ है।
- बाप तो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं फिर वहाँ आधाकल्प कोई पुकारते ही नहीं।
- यह बाप तो कहते हैं मैं निष्काम सेवाधारी हूँ। मनुष्य कोई निष्काम हो न सकें। भूख मर जायें। हम थोड़ेही भूख मरेंगे, हम तो अभोक्ता हैं।
- बाप देखो कैसी कमाल करते हैं जो मनुष्य को देवता, रंक को राव (राजा) बना देते हैं।
- उनको तुम कहते भी हो दु:ख हर्ता सुख कर्ता। इन जैसा दान कोई होता ही नहीं। वह है सुख देने वाला।
- अभी बाप तुमको पढ़ाने आये हैं। वही ज्ञान सागर है।